रविवार, दिनाँक **19-05-2024** को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

दासी दे ह्रदय पोंदी ए ठंड, महाबीर जी दे चरणां नू देख के।

चरणां नू देख के प्यारे प्यारे चरणां नू देख के।।

दासी दे ह्रदय पोंदी ए ठंड, महाबीर जी दे चरणां नू देख के।।

महाबीर जी दे चरण प्यारे, सारी सृष्टि दे हैन सहारे।

दासियां नू तारन वाले, प्यारे प्यारे चरणां नू देख के।।

जेहड़ियां महाबीर जी दा नाम ध्यावन, महाबीर रघुनाथ जी दे चरण दिखावन।

दासियां दी आस पुजावन, प्यारे तेरे चरणां नू देख के।।

ओ हिन मेरे गदाधारी, दासियां ते मेहर कीती हिने भारी।

दासी चरणां तों जावे बलिहारी, प्यारे तेरे चरणां नू देख के।।

शास्त्र महाबीर जी दा रस्ता बतावन, महाबीर जी रघुनाथ जी दी चरणी बहलावन।

भवसागर पार लंघावन, प्यारे प्यारे चरणां नू देख के।।

सांवले चरणां दे विच बहलावन, मस्ताना मस्ती दिखावन।

दासियां दे सारे कष्ट मिट जावन, प्यारे प्यारे चरणां नू देख के।

ऋषि मुनि वी नाम ध्यावन, बली जी दी लीला दा अन्त न पावन।

दासियां नू अचरज खेल दिखावन, प्यारे तेरे चरणां नू देख के।।

दासी चरणां तों जावे बलिहारी, महाबीर जी भक्त हितकारी।

दासियां दी किश्ती पार उतारी, प्यारे प्यारे चरणां नू देख के।।

सजनों इस भजन द्वारा सच्चेपातशाह जी सभी सुरतों को कह रहे हैं कि मुझ दासी के हृदय में सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के वचनों को सुनकर एक विशेष प्रकार की शान्ति का अनुभव होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचन हृदय को शान्ति प्रदान करने वाले हैं। अब जहाँ शान्ति होती है, वहाँ सजन अपनी आत्मिक शक्ति से परिपूर्णतया परिचित होता है। ऐसा सजन फिर अपनी जीवन यात्रा के दौरान निर्भय व निर्वैर होकर सर्वोच्च लक्ष्य प्राप्ति के प्रति अग्रसर होता है। अतः सजनों यदि भवसागर से पार होना चाहते हो तो कहना मानकर संसार की तरफ से मुख घुमाकर/मोड़कर, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी संग जोड़ लो व उनके वचनों पर स्थिरता से बने रह अपने आत्म-स्वरूप को जान व पहचान लो। इस प्रकार हर भटकाव से विमुक्त होकर निरर्थक जीवन जीने के स्थान पर सार्थक जीवन जीना आरम्भ कर दो। याद रखो शास्त्र विहित सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का प्रत्येक वचन सार्थक है व जो उनके वचनों को धारण कर, उन पर स्थिर रहता है वह निःसन्देह व्यावहारिक रूप से अपना जीवन सहज ही सार्थक बना लेता है।

आगे सजनों जानो कि यह जग चार दिनों का मेला है, अतः इस मेले की बनावटी तड़क-भड़क में मत उलझो क्योंकि समय कम है। इस संदर्भ में आप मानोगे कि जीवन का पहला चरण तो बाल्यावस्था यानि नादानी में ही बीत जाता है। तत्पश्चात दूसरा चरण युवावस्था की मौज-मस्ती में व्यतीत हो जाता है और अज्ञानमय बालक आत्मज्ञान के अभाव में युवा-अवस्था आते-आते, अनाड़ियों की तरह जीवन-यापन करता हुआ कुरस्ते पर चढ़ जाता है। अब आगे तीसरा चरण प्रौढ़ अवस्था का होता है और चौथा अपने आप में बुढ़ापा होता है जिसके अंतर्गत इन्द्रियाँ शिथिल हो व शरीर रोगी हो जाता है और इंसान अपने आप में स्वतन्त्रता से कुछ करने के योग्य नहीं रहता। इस विषय में सजनो अपने आप को देखो कि बचपन व्यतीत हो गया, युवा-अवस्था भी व्यतीत हो गई, अब आप प्रौढ़ या वृद्धावस्था में आ गये हो। जिस प्रकार पहले व दूसरे चरण का समय बेकार चला गया, उसी प्रकार जीवनकाल का यह समय भी बेकार न चला जाये, इस हेतु समझो कि अभी भी आपके पास बचाव का सुनहरी अवसर शेष है यानि अभी भी आप चौरासी लाख योनियों में फँसने से बच सकते हो। अतः स्वयं को समझा लो और अपने आप पर तरस खाओ। आशय यह है कि उम्र के जिसभी पड़ाव में हो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों का अनुसरण कर, तद्नुसार जीवन जीने की कला सीखो व अपना अगला जीवन निर्विकारिता से जीते

हुए परम लक्ष्य को प्राप्त कर लो। अब बड़े ध्यानपूर्वक और समझते हुए सुनो कि इसके लिये प्रीति किसके संग लगानी हैः-

(महाबीर जी के मुख के शब्द)

प्रीति चरण कमल संग जोड़, चरण कमल संग आसरा हो।

जय सियाराम जय जय सियाराम, जय सियाराम जय जय सियाराम।

चरण उन्हां दे हैन उजले, दिल राम जी दे चरणां विच जोड़।

जय सियाराम जय जय सियाराम, जय सियाराम जय जय सियाराम।।

प्रीति चरणां नाल निभावे, तदों पावे चरणां विच ठौर।

जय सियाराम जय जय सियाराम, जय सियाराम जय जय सियाराम।।

सोहणे दे चरण हिन सुहावने, चरण कमल विच चित्त नूं तूं जोड़।

।जय सियाराम जय जय सियाराम, जय सियाराम जय जय सियाराम।।

चाह चरणां दे विच लावे, फिर राहवे चरणां दे कोल।

जय सियाराम जय जय सियाराम, जय सियाराम जय जय सियाराम।।

प्रीति चरणां दे विच लावे, जिवें प्रीति ए चन्द चकोर।

जय सियाराम जय जय सियाराम, जय सियाराम जय जय सियाराम।।

होके प्रसन्न चरणां विच राहवे, जिवें कमल फुल दा सूरज नाल जोड़।

जय सियाराम जय जय सियाराम, जय सियाराम जय जय सियाराम।।

ओ हिन चरण चित्त चुरावने, तदों मिलदे हिन चित्त चोर।

जय सियाराम जय जय सियाराम, जय सियाराम जय जय सियाराम।।

सजनों इस कीर्तन में कई-कई मिसालें देकर अमर प्रीत का वर्णन किया गया है। आपने भी इन मिसालों से शिक्षा लेकर, अपनी प्रीत को अमरता का प्रतीक बनाना है। कहने का तात्पर्य यह है कि अगर आपकी सुरत हर क्षण शब्द संग जुड़ी रहे तो आप अमर प्रीत का सुख-आनन्द प्राप्त कर सकते हो व फिर कोई भी शक्ति उसका खण्डन नहीं कर सकती। यहाँ सजनों जानो कि जब अनेकों संग प्रीत होती है तो वही प्रीत टूटने पर अत्यन्त दुःख प्रदान करती है। इस संदर्भ में आपको यह दुःख न भोगना पड़े और आप आजीवन परमानन्द में बने रह सको, उसके लिये केवल एक ही पुरुषार्थ दिखाने की आवश्यकता है और वह यह है कि आपकी सुरत शब्द संग जुड़ी रहे। यकीन मानो ऐसा होने पर जीवन का यथार्थ ज्ञान, वहीं से प्राप्त होने लगेगा और आप इस जगत में आत्म-निर्भरता से आत्म-विश्वास के साथ निर्विकारितापूर्ण विचरने के काबिल बन जाओगे। अतः आप केवल एक ही प्रयास यानि सुरत को शब्द संग जोड़ने का अभ्यास करो और निरन्तर करते जाओ। इस निरन्तरता को साधकर अपना जीवन दिव्य बना लो और दिव्यता के प्रतीक बन, जीवन की बाज़ी जीत जाओ। इसके अतिरिक्त बेशक कुछ मत करो परन्तु यह अवश्य सुनिश्चित करो कि समस्त संसारी कार्य-व्यवहार करते हुए, आपकी सुरत शब्द संग जुड़ी रहे। सजनों ऐसा खुद करो और बच्चों व अन्यों को भी सिखाओ व इस तरह परोपकार कमाओ। अब कीर्तन सुनोः-

(श्री राम चन्द्र जी के मुख के शब्द)

श्री साजन जी को कह रहे हैं

आओ मेरा प्यारा ओ दिलबर हमारा, आओ मेरा प्यारा।

कैसा है ओ नज़ारा ओ दिलबर हमारा, कैसा है ओ नज़ारा।।

दिल लैं गियों दिल तैं खसिया ओ दिल चुराने वाला।

आओ मेरा प्यारा ओ दिलबर हमारा, आओ मेरा प्यारा।।

दिल लैं गियों तूं मेरा, मैं हूं तेरा तूं है मेरा।

तेरा कैसा प्रेम निहारा ओ दिलबर हमारा, तेरा कैसा प्रेम निहारा।।

तेरा प्रेम आके अड़िया, उस प्रेम विच मैं फड़िया।

तेरा कैसा खेल खिलारा ओ दिलबर हमारा, तेरा कैसा खेल

खिलारा।।

जदों प्रेम मेरे नाल पाया, वस प्रेम दे मैं आया।

तेरा कैसा है चमकारा ओ दिलबर हमारा, तेरा कैसा है चमकारा।।

अपना आप तैं ही जाना अपना आप ही पहचाना।

हो ओ३म् दे ही अन्दर सिरजनहार है नाम तुम्हारा।।

ध्वनिः-

आहा मुरली पई वजदी ए, कैसी पई सजदी ए।

ओ नज़री नहीं पैंदी, आवाज़ा पई देंदी ए।

ओ नज़री नहीं पैंदी, आवाज़ा पई देंदी ए।।

आहा दिल नू खसदी ए, ओ दिल चुरांदी ए।

नज़री नहीं पैंदी, आवाज़ा पई देंदी ए।।

सजनों कमाल का यह ग्रन्थ है और कमाल की इसकी वाणी है। इसका एक-एक शब्द बहुत महान है, जीवनदायक है और इसकी अनहद नाद सर्वत्र गुन्जायमान है। बेशक वह नाद दृष्टिगत नहीं परन्तु इसकी सार्थक ध्वनि को हम सुन सकते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में सजनों जानो कि उस सार्थक ध्वनि को सुनने के लिये हमारी सुरत/ख़्याल को जगत से समरसतापूर्वक आज़ाद रहना होगा। ऐसा होने पर हमारे अन्तर्घट में शान्तमय वातावरण का निर्माण होगा। कहने का आशय यह है यह जगत अशान्ति का हेतु है। इस अशांति से बचने हेतु, शान्तमय वातावरण में अनहद नाद को सुनना और उस ध्वनि द्वारा जो जो कि आत्मिकज्ञान प्रवाहित हो रहा है, उसको धारणकर अपने जीवन का यथार्थ अर्थ सिद्ध करने

के योग्य बनना हमारी सफलता का हेतु है। अतः प्रयास करो क्योंकि यह शास्त्र-विहित बात नितान्त सत्य है। यह व्यवस्था कुदरत में विधिवत् विद्यमान है और कुदरत के बन्दे इस कुदरती व्यवस्था को ग्रहण व धारण करने में समर्थ हैं। ज्ञात हो कि इंसान में ऐसी समर्थता तभी आती है जब उसका ख़्याल जगत से आज़ाद होता है। ऐसा इसलिए क्योंकि वह या तो जगत को सुन सकता है या फिर अनहद नाद को सुन सकता है। इस संदर्भ में यदि वह अनहद नाद को सुनता है तो यह अपने आप में अन्तर्मुखी होने की बात होती है और यदि जगत को सुनता है तो यह बहिर्मुखी होने की बात होती है। यहीं पर जीवन हारने या जीतने का निश्चय होता है। इस तरह हर मानव को अपनी हार-जीत का निश्चय खुद लेना होता है और वैसा ही प्रयास दिखाना भी होता है।

यहाँ आप मानोगे कि अनहद नाद से जो सार्थक शब्दों का निर्मल प्रवाह चलता है, ख़्याल को जगत से आज़ाद रखते हुए, अफ़ुरता से उस सत्य संग जोड़ रखना व उन्हें धारण करना, हमारे अन्दर अमरता का भाव जाग्रत करता है। इसके विपरीत ख़्याल को जगत के साथ जोड़ना हमें बौद्धिक तौर पर असत्य से जोड़ता है। यहाँ सजनों जान लो कि - असत्य हार है जबकि सत्य जीत है। सत्य अनमोल हीरा है जबकि असत्य लोहा है। सत्य पर चलने वाला अपने अनमोल हीरे रूपी सार को पा सकता है। इसके विपरीत असत्य पर चलने वाला इस उपलब्धि से वंचित रहते हुए कमज़ोर, कमज़ोर होता चला जाता है क्योंकि उसके जीवन के हर पहलू में निरर्थकता होती है। ऐसे में उसके अन्दर सत्यार्थ कैसे समा सकता है? अब जब अर्थ आपके अन्दर समा ही नहीं रहा यानि आपको समझ ही नहीं आ रहा तो आपके जीवन का अर्थ क्या है, इस बात की आपको कैसे समझ आ सकती है? सजनों यह बौद्धिक स्तर पर

कमज़ोर होकर दूसरों पर निर्भर होने की बात है। इसके विपरीत सत्य संग जुड़ना निर्मल बुद्धि यानि सत्य प्रकाशित होने की यानि आत्म-स्मृति में आने की बात है। आत्म-स्मृति में आने का अर्थ है कि मैं जानता हूँ कि मैं क्या हूँ? यानि मैं जानता हूँ मै और कुछ नहीं, अपितु परमात्मा ही हूँ। अब जब यह खेल चलता है तो उसके तीन पात्र होते हैं - एक आत्मा, दूसरा परमात्मा और तीसरा अपना प्रतिबिम्ब (जिसको सुरत यानि ख़्याल कहते हैं)। आगे जानो कि यह जगत नश्वरता का प्रतीक है और आत्मा अमरता का प्रतीक है व ख़्याल इन दोनों के मध्य में है। आगे यह हमारी बौद्धिक शक्ति पर निर्भर करता है कि हमारा

मानसिक झुकाव किस तरफ हो रहा है। यहाँ जानो कि अगर जगत की ओर हमारा झुकाव होता है तो हम कमज़ोर हो जाते हैं और अगर आत्म-स्वरूप की ओर झकाव होता है तो हम सबसे श्रेष्ठ मानव बन जाते हैं। अब इन दोनों के परिणामों का आंकलन करो। एक परिणाम तो सबसे श्रेष्ठ बनाता है और दूसरा निकृष्ट बनाता है। यह जानने के पश्चात् आप ही बताओ कि आपको क्या बनना शोभा देता है?

'सबसे श्रेष्ठ बनना शोभा देता है।'

सजनों अगर निकृष्टता से ऊपर उठ, सबसे श्रेष्ठ मानव बनना चाहते हो तो यह बहुत अच्छी बात है। इस हेतु सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति अनुसार अपनी सुरत को आद् शब्द में स्थित कर दो। इस तरह बहिर्मुखी संसार की तरफ से पलटा खाकर अन्तर्मुखी हो जाओ ताकि आपकी सुरत ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों के अधीन होने के स्थान पर, आत्म स्वरूप में स्थित हो जाए। सुरत जब आत्म-स्वरूप में स्थित हो गई तो उसको सत्यज्ञान प्राप्त हो जाएगा और आत्म साक्षात्कार हो जाएगा। इस तरह उसे समझ में आ जाएगी कि आत्मा में कौन है यानि आत्मा का आधार कौन है? - परमात्मा। फिर वह परमात्म भाव को धारण कर लेगी और जान जाएगी कि मैं ही परमात्मा हूँ। अतः सजनों, अगर परमात्मा का खेल जानना है तो सुरत को आत्म-स्वरूप में स्थित करने के बगैर कोई साधन नहीं है। आत्म-स्वरूप में स्थित होने पर ही उसकी पहुँच परमात्मा तक बन सकती है अन्यथा तो सुरत संसार में रूल जाती है। ऐसे में वह परमात्मा को कैसे देखेगी, वह तो उससे और अधिक दूर से दूर होते होते निघरी हो जाएगी। ऐसा न हो इस हेतु सजनों सुरत को आत्मस्वरूप में स्थिर कर लो। सुरत आत्मस्वरूप में स्थिर हो गई तो उसको यह प्रतीत होगा कि यह संसार असार वस्तु है, इसका अपना कुछ अस्तित्व नहीं है। अब जिसका अपना अस्तित्व ही नहीं है तो क्या वह अन्यों को सहारा दे सकता है? अतः सजनों मानो कि अपने ख़्याल को संसार के साथ जोड़कर आप मानसिक रूप से कभी भी स्थिर-बुद्धि इंसान नहीं बन सकते। कोई भी आपको बहका सकता है क्योंकि आपके पास पूर्ण ज्ञान नहीं है यानि आपकी सुरत पूर्णता परमात्मा के साथ जुड़ी हुई नहीं है और आप कुदरत की रमज़ नहीं जानते। इसके विपरीत यदि सुरत को आत्मस्वरूप में स्थिर कर लोगे तो सुरत जान जाएगी कि मैं और कुछ नहीं अपितु परमात्मा का ही प्रतिबिम्ब हूँ यानि परमात्मा ही हूँ। अब जब उसे यह बोध हो गया कि मैं परमात्मा ही हूँ, तो उसको सर्व एकात्मा का दर्शन हो जाएगा। फिर उसे लगेगा कि किसी में कोई फर्क नहीं है बल्कि हम सब समरूप हैं। अतः हमारे लिये समभाव-समदृष्टि अनुकूल ही जीवन जीना बनता है। ऐसा

करने पर ही हम सफल हो सकते हैं और हमें यह प्रतीति हो सकती है कि इस सृष्टि का सृजनकर्त्ता और कोई नहीं अपितु मैं ही इस सृष्टि का सृजनकर्त्ता हूँ।

जब मैं ही सृजनकर्त्ता हूँ तो मैं कैसे अपनी सृष्टि की यानि किसी भी वस्तु की हानि कर सकता हूँ? तब लगेगा कि हानि करना तो मेरी प्रवृति ही नहीं है। यहाँ आकर मैत्री भाव स्थापित हो जाएगा और उस आदि-अनादि मित्र की हर वस्तु में प्रतीति होगी। इस तरह एक दर्शन में स्थित होने पर खेल खिलारा समाप्त हो जाएगा।

सजनों यह कोई लम्बी बात नहीं है। बस आत्मा, परमात्मा और सुरत का खेल जान जाओ और तीनों लोकों के मालिक बन जाओ। फिर सुरत के भी मालिक हम, शब्द के भी मालिक हम और जो शब्द में स्थित है वह भी हम। इस तरह हम त्रिलोकी की कुर्सी पर विराजमान हो जाएंगे। सजनो जानो कि यह सत्-शास्त्र हमें उधर ही ले जा रहा है यानि त्रिलोकी की कुर्सी पर विराजमान करने की ओर ले जा रहा है। तो फिर हम कमज़ोर क्यों पड़ते हैं जबकि हमारे पास रास्ता दिखाने वाला शास्त्र है। हमने सिर्फ शास्त्रविहित् वचनों के सम्मुख 'हाँ-जी' करनी है और निर्भयता से चलते जाना है। आशय यह है कि इस ग्रन्थ के विधि-विधान अनुसार आगे बढ़ते जाओ तो आपका कोई कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेगा। आपकी सब तरफ से फतह ही फतह होगी। आप सब इस फतह को प्राप्त हों इन्हीं शुभकामनाओं सहित।